एम. कॉम

प्रथम सत्र

वाणिज्य में स्नातकोत्तर उपाधि

(एम. कॉम)

प्रथम सत्र

सत्रीय कार्य

2026

जनवरी 2026 तथा जुलाई 2026 प्रवेश सत्र के लिए

प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – **1100 68**

प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

वाणिज्य में स्नातकोत्तर उपाधि

प्रथम सत्र

सत्रीय कार्य - 2026

प्रिय छात्र/छात्राओं,

जैसा कि कार्यक्रम दर्शिका में स्पष्ट किया गया है, इस कार्यक्रम में आपको प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए एक सत्रीय कार्य करना है। सभी सत्रीय कार्य आपको एक साथ भेजे जा रहे हैं।

अंतिम परीक्षा में सत्रीय कार्य के लिए 30 प्रतिशत अंक निर्धारित हैं। सत्रांत परीक्षा में बैठने योग्य होने के लिए यह आवश्यक है कि समय सूची के अनुसार आप इन सत्रीय कार्यों को पूरा करके भेज दें। सत्रीय कार्य को करने से पहले आपको चाहिए कि कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ लें, जिसे आपके पास अलग से भेजा गया है।

यह सत्रीय कार्य दो प्रवेश सत्र अर्थात् **(जनवरी 2026 और जुलाई 2026)** के लिए वैध है, इसकी वैधता निम्नलिखित है :–

1. जो **जनवरी 2026** में पंजीकृत है उनकी वैधता **दिसंबर 2026** है।

2. जो **जुलाई 2026** में पंजीकृत है उनकी वैधता **जून 2026** तक है।

यदि आप जून सत्रांत परीक्षा में बैठना चाहते हैं तो इन्हें **15 मार्च** तक अवश्य जमा कर दें। यदि आप दिसम्बर सत्रांत परीक्षा में बैठना चाहते हैं तो आपके लिए आवश्यक है कि आप इन्हें **15 अक्टूबर** तक अध्ययन केंद्र के संयोजक के पास जमा कर दें।

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम का कोड	**:**	**एम. सी. ओ. -021**
पाठ्यक्रम का शीर्षक	**:**	**प्रबंधकीय अर्थशास्त्र**
स्त्रीय कार्य का कोड	**:**	**एम. सी. ओ. -021/टी. एम. ए./ 2026**
खण्डों की संख्या	**:**	**सभी खण्ड**

अधिकतम अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. प्रबंधकीय अर्थशास्त्र की प्रकृति, क्षेत्र तथा महत्व की व्याख्या कीजिए। यह स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार आर्थिक सिद्धांत एवं उपकरण जोखिम एवं अनिश्चितता की परिस्थितियों में प्रबंधकों को तर्कसंगत निर्णय लेने में सहायता करते हैं। अपने उत्तर को व्यावसायिक व्यवहार से उपयुक्त उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए। **(20)**

2. (क) मांग की परिभाषा दीजिए तथा किसी उपभोक्ता टिकाऊ उत्पाद की मांग को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की चर्चा कीजिए। उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से यह स्पष्ट कीजिए कि आय में परिवर्तन एवं संबंधित उत्पादों की कीमतों में परिवर्तन किस प्रकार किसी फर्म के मांग संबंधी निर्णयों को प्रभावित करते हैं। **(10+10)**

(ख) मांग की मूल्य लोच, मांग की आय लोच तथा मांग की पार लोच में अंतर स्पष्ट कीजिए। व्यावसायिक निर्णय-निर्माण में प्रत्येक प्रकार की लोच के प्रबंधकीय महत्व की व्याख्या कीजिए।

3. (क) उत्पादन की अवधारणा की व्याख्या कीजिए तथा परिवर्तनीय अनुपात के नियम (Law of Variable Proportions) पर चर्चा कीजिए। किसी विनिर्माण फर्म के अल्पकालीन उत्पादन निर्णयों के लिए इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण कीजिए। **(10+10)**

(ख) बड़े पैमाने की किफ़ायते (economies of scale) एवं बड़े पैमाने के अलाभ (diseconomies of scale) की व्याख्या कीजिए और यह स्पष्ट कीजिए कि ये अवधारणाएँ दीर्घकालीन उत्पादन एवं लागत निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

4. (क) प्रबंधकीय निर्णय-निर्माण में प्रयुक्त विभिन्न लागत अवधारणाओं की चर्चा कीजिए। अल्पकाल एवं दीर्घकाल में लागतों तथा मूल्य निर्धारण एवं उत्पादन निर्णयों के लिए उनकी प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए। **(10+10)**

(ख) पूर्ण प्रतिस्पर्धा एवं एकाधिकार बाजार संरचनाओं की तुलना मूल्य निर्धारण, उत्पादन निर्णय तथा लाभ की स्थितियों के संदर्भ में कीजिए।

5. फर्म के उद्देश्य के रूप में लाभ अधिकतमकरण (Profit Maximization) की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। आधुनिक व्यावसायिक उद्यमों के संदर्भ में विक्रय अधिकतमकरण (Sales Maximization) एवं वृद्धि अधिकतमकरण (Growth Maximization) जैसे वैकल्पिक व्यावसायिक उद्देश्यों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। **(20)**